# Akshara Multidisciplinary Research Journal

**Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal**

## April 2022

## Special Issue 05 Volume III (B)

**Akshara Publication**
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54


# Editorial Board

## -: Chief & Executive Editor:–

**Dr. Girish Shalik Koli**
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

## -:Co-Editors :–

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi,** *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Chantharangsri Phrakhrusangkharak Yanakorn,** Assistance Professor Songkhla,Thailand
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.


**AMRJ Disclaimer:**

*For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.*

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54

# Index


| Sr.No | *Title of the Paper* | Author's Name | Pg.No |
|---|---|---|---|
| 1 | Evolutionary Development in the Stories of Kuwaiti Writers | **Shakhlo Irgashbaevna Akhmedova** | **05** |
| 2 | Population Explosion: Causes, Effects and Preventions in India | **Km. Ritu Khokher<br>Dr. Smt. Alka Rani<br>Dr. Satyendra Singh Tomar** | **09** |
| 3 | A Study of Emotional Intelligence in Higher Secondary Level Students | **Dr. Shikha Banswal** | **14** |
| 4 | SMARTPHONE and internet use among undergraduate girl students of Physics subject in Malegaon. | **Prof. Jayant P Dixit** | **20** |
| 5 | A Study On Impact Of Pandemic Covid-19 On Education System | **Geetha R** | **26** |
| 6 | Prospects and Problem of Adventure Tourism Places Around the Nashik City, Maharashtra | **Anil Rambhau Mengal<br>Archana P. Bobade** | **30** |
| 7 | The Veneer of Economically Advanced Society in Sebastian Faulks's "A Week in December" | **Rupali G. Waghmare<br>Dr. Anil S. Sugate** | **37** |
| 8 | Old Age Homes : Study of Alienated Parents in Modern India | **Lovely,<br>Dr. Ajit Singh Tomar** | **43** |
| 9 | Despondent Lives of Afghan Women and Unaccompanied Child Refugees: On a Path for a Better Tomorrow | **Kajal Kumari** | **48** |
| 10 | Gender Fixation in Normative Parenting Books | **Divya** | **54** |
| 11 | The Nature of Dalit Women Writers' Contribution to Dalit Literature in the form of Short Stories | **Shweta Singh** | **59** |
| 12 | Declining Sex Ratio in Erandol Taluka (Jalgaon): A geographical Analysis | **Dr. Siddharth B. Sonawane<br>Dr. Ramesh C. Ahire** | **65** |
| 13 | Efforts to Eliminate Child Labor in India: A Historic Overview | **Km. Ritu Khokher** | **71** |
| 14 | अहोम जाति की संस्कृति और इतिहास | **डा. दारा योगानंद** | **76** |
| 15 | पर्यावरणीय दृष्टिकोण से श्रीमद्भगवद्गीता का विश्लेषणात्मक अध्ययन | **मधु** | **79** |
| 16 | स्वर्गीय 'लता दीनानाथ मंगेशकर' का अप्रतिम योगदान | **डॉ. पार्वती शर्मा चांदला** | **84** |
| 17 | शारीरिक छवि के निर्माण में मीडिया की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य | **छाया कुमारी** | **88** |
| 18 | तेजेंद्र शर्मा के 'टेम्स नदी के तट से' काव्य-संग्रह में चेतना के विविध आयाम | **प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण** | **92** |
| 19 | पंचायती राज में महिलाओं की सहभागिता: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण | **दीपक कुमार यादव** | **96** |
| 20 | दिव्यांगों के शैक्षणिक विकास में नीतियों एवं कानूनों की समीक्षा | **कु. रचना / डॉ. निधि मिश्रा** | **100** |

E- ISSN 2582-5429

**Akshara Multidisciplinary Research Journal**

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54


| Sr.No | Title of the Paper | Author's Name | Pg.No |
|---|---|---|---|
| 21 | आंदोलन के नवीन आयाम: गाँधी और 'राम की शक्ति-पूजा' के विशेष संदर्भ में | दुर्गा प्रसाद | 105 |
| 22 | अशोक चक्रधर के काव्य का मनोवैज्ञानिक चित्रण | श्रीमती रोशनी नायक | 109 |
| 23 | कामायनी: मिथक और दर्शन | डॉ. शीला आहुजा | 113 |
| 24 | 'कबीरा खड़ा बाज़ार में' कविता में वर्तमान परिदृश्य | शिन्टु एलिज़बेथ शाजी | 116 |
| 25 | 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में व्यक्त बुज़ुर्गों की दयनीय स्थिति | डॉ अनीता यादव | 118 |
| 26 | हिंदी नवजागरण के अग्रदूत : भारतेंदु हरिश्चंद्र | डॉ. प्रकाश विष्णु कांबले | 122 |
| 27 | गांवों के सर्वांगीण विकास में ग्राम पंचायतों की भूमिका | डॉ सुदीप कुमावत<br>सुमन मीणा | 126 |
| 28 | आभपरा शिखर ; आभ में उड़ने की अनुभूति | किरीट गुणवंतराय जोशी | 130 |
| 29 | हिंदी तथा मराठी के सामाजिक नाटकों में यौन-संबंध | डॉ.राहुल मोहन मराठे | 134 |
| 30 | 21 वीं सदी की हिंदी बाल कविता में राष्ट्रीय चेतना | शैलेषकुमार बाबूभाई तलपदा | 138 |
| 31 | आतंकवाद: कारक, कारण और निवारण | डॉ. निशा वालिया | 140 |
| 32 | इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में आंबेडकर दर्शन | डॉ. भानुदास भिकाजी आगेडकर<br>सागर रघुनाथ कांबळे | 145 |
| 33 | राही मासूम रजा के उपन्यासों में व्यक्त साम्प्रदायिता का रंग | प्रा.डॉ. पूनम त्रिवेदी | 149 |
| 34 | मॉरिशस में हिंदी साहित्य | जया सुभाष बागुल | 154 |
| 35 | नारी विमर्श: भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों के मत | डॉ. दिप्ती सिन्हा | 157 |
| 36 | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की प्रासंगिकता | डॉ. नवनाथ सर्जेराव शिंदे | 161 |
| 37 | इक्कीसवी सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी संस्कृति | ज्योति बाई.वी, | 164 |
| 38 | कबीर वाणी की उपादेयता | प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले | 167 |
| 39 | अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों का सेवारत् प्रशिक्षण का अध्ययन | प्रा.डॉ. तारसिंग नाईक | 169 |
| 40 | ग्रामीण सामुदायिक विकासात पंचायत राजची भूमिका | प्रा.डॉ.ताराचंद माधव सावसाकडे | 174 |
| 41 | महात्मा फुले यांचा बहुजनवादी विचार | प्रा. डॉ. राहुल गोंगे | 179 |
| 42 | महात्मा बसवेश्वर - एक थोर समाजसूधारक | प्रा. डॉ. बिरादार प्रतिभा रंगराव<br>दत्ताराम माधवराव भोसले | 185 |
| 43 | आदिवासी कविता आणि वास्तव | प्रा. माळवी शंकर आण्णाप्पा | 190 |
| 44 | स्वराज्य | प्रा. कांबळे संतोष निवृत्ती | 192 |
| 45 | समायोजन | प्रा. माधुरी देविदास पाटील | 194 |
| 46 | श्रीकांत देशमुख यांचे वृक्ष प्रेम | कोमल बालाजी भरणे | 198 |
| 47 | स्त्रीवादी साहित्य : स्वरूप, संकल्पना व स्त्रीवादी साहित्याचा परिचय | प्रा. डॉ. स्वाती काशिनाथ महाजन | 201 |
| 48 | संत मीरा बाई पर एक नजर (Urdhu) | शहाजी गजाला रिजवान | 205 |

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54

32

# इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में आंबेडकर दर्शन

**डॉ. भानुदास भिकाजी आगेडकर**
शोध निर्देशक हिंदी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय,वाई

**सागर रघुनाथ कांबळे**
शोध-छात्र

---

**प्रस्तावना**

भारतीय दार्शनिक विचारधारा में आम्बेडकर दर्शन का स्थान विशिष्ट है । बाबासाहब डॉ .भीमराव आंबेडकर के विचारों से प्रेरित होकर सबसे पहले मराठी भाषा में साहित्य लेखन किया गया I इसके उपरान्त हिंदी में भी साहित्य लेखन किया जाने लगा I इक्कीसवीं सदी में आंबेडकर दर्शन पर अनेक शोध विचार ,विश्लेषण प्रस्तुत किए गए I हिंदी भाषा की कविता में आंबेडकर दर्शन का अनुप्रयोग दिखाई देता है I इसमें अनेक कवि है ,जिसमें अनेक कवियों की कविता का अध्ययन किया है I प्रस्तुत आलेख में आंबेडकर दर्शन के मूलतत्वों का आधार लेकर विश्लेषण किया है I

**शोध सारांश**

21 वीं सदी के कवियों ने अपनी कविताओं में समाज के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया है। वे समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरोध में एकता की कामना रखते हैं। वे आम आदमी के दर्द को राहत में बदलने के लिए 'आंबेडकर दर्शन' से प्रेरणा लेने की बात अपनी कविताओं में करते हैं । पिछडे वर्ग के कवि समाज में समन्वय चाहते हैं। उनका मानना है कि, भारतीय समाज में सभी धर्म, जातियों, संप्रदाय के लोग मिल-जुलकर रहें। इक्कीसवीं सदी के कवियों ने भ्रष्टाचार रहित, समस्याओं से विहीन, सुखी समाज की कल्पना की है। जहाँ आम आदमी को न्याय, रोटी, कपडा और मकान उपलब्ध होकर वह स्वतंत्रता, समता, बंधुता से जीवन बिता सके। किसी भी विचारधारा के पीछे उसका एक दर्शन होता है। जिसके आधार पर यह विचारधारा विकसित होती है। 'दर्शन' ही वह मूल तत्व है जो किसी विचारधारा या आंदोलन को पहचान देता है। जिसमें स्वावलंबन और स्वाभिमान की उत्कट आकांक्षा, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय का आग्रह तथा समता, प्रेम और बंधुभाव की कामना है। जिसे इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में 'आंबेडकर दर्शन' के परिप्रेक्ष्य में हम देख रहें हैं , जिसका विश्लेषण प्रस्तुत आलेख में किया गया है I

**कूट शब्द** आंबेडकर दर्शन , हिंदी कविता, सामाजिक समता, इक्कीसवीं सदी।

**प्रस्तावना-** 'आंबेडकर दर्शन' एक व्यापक विचारधारा है। इस विचारधारा को गौतम बुद्ध, चार्वाक, कबीर, जोतिबा फुले और राजर्षी शाहू महाराज आदि के विचारों एवं जीवन दर्शन ने समृद्ध बनाया है । डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी पर गौतम बुद्ध, कबीर और जोतिबा फुले जी के विचारों तथा जीवन का गहरा प्रभाव रहा है। इसी कारण उन्होंने इन तीनों महापुरुषों को अपना गुरू स्वीकार किया था। उन्होंने अपने भाषण में कहा था कि, ''मेरा जीवन तीन गुरूओं से बना हुआ है। मेरे पहले और सर्वश्रेष्ठ गुरू है महात्मा बुद्ध, दुसरे गुरू हैं कबीर और तीसरे गुरू जोतिबा फुले हैं।''1 इन गुरूओं के दिखाए मार्ग पर चलते हुए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने जीवन संघर्ष किया था। महाराष्ट्र में इनकी विचारधारा को 'फुले-शा हू-आंबेडकर' की विचारधारा कहा जाता है। इस विचारधारा को 'आंबेडकर दर्शन ' कहना ही अधिक तर्कसंगत लगता है। यह विचारधारा गौतम बुद्ध से लेकर चार्वाक, कबीर, फुले और राजर्षी शाहू महाराज के विचारों के साथ-साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचारों के भी दर्शाती है। इन सभी महापुरूषों के विचारों को समेटे हुए होने के कारण इसका क्षेत्र व्यापक बन जाता है।

आंबेडकर दर्शन ' क्रांतिकारी तत्वज्ञान है। सदियों से जिस पिछडे समाज के लोगों को पशु से भी हीन दशा में जीवन जीने के लिए मजबूर किया था, उन्हें गुलामी की जंजीरों में जकड़कर रखा था, इन लोगों में क्रांति की ज्वाला सुलगाने का महत्वपूर्ण कार्य डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने किया था। उन्होंने इस दलित, पीडित समाज को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कर नई विषमता रहित समाज रचना के तत्वज्ञान को निर्माण किया उन्होंने केवल पिछडे वर्ग के समाज के लोगों को ही मुक्ति का मार्ग नहीं दिखाया तो, समूचे पीडित, शोषित लोगों का नेतृत्व उन्होंने किया। उनके मन में स्वाभिमान की भावना को जगाते हुए उन्होंने कहा, ''मर्दो की तरह दो दिन जीवन जीना, यह दूसरों का गुलाम बनकर सौ साल जीवन जीने से भी कई गुणों से श्रेष्ठता का लक्षण है।''2 इस तरह उनके यह विचार समूचे पिछड, शोषित, पीडित लोगों के लिए प्रेरक है। जिस कारण इन लोगों के मन में स्थित विद्रोह की ज्वाला धधक उठती है। इस तरह 'आंबेडकर दर्शन ' यह क्रांतिकारी तत्वज्ञान है।

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54

'आंबेडकर दर्शन ' निरीश्वरवादी है। वह ईश्वर, आत्मा, परमात्मा, पुर्नजन्म तथा परलोक आदि को नकारता है। साथ ही ईश्वर को सृष्टि का निर्माता नहीं मानता है। ईश्वर ने ही सृष्टि का निर्माण किया है, वही सृष्टि का नियंता है। वही अंतिम सच है तथा उसकी ही अंतिम सत्ता है, इन बातों को 'आंबेडकर दर्शन ' स्वीकार नही करता है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर अपने देश की अवनति का कारण इसी ईश्वरवाद को मानते थे। वे अपने भाषण में कहते हैं, ''हमारे इस हिंदुस्थान देश की जो अवनति हुई है या हीनत्व की दशा हुई है उसका कारण यही ईश्वरवाद ही है।''3 आंबेडकर दर्शन एक परिवर्तनशील विचार है। इसमें परंपरागत रूढियों विचारों तथा व्यवस्थाओं में परिवर्तन करने की क्षमता है। 'आंबेडकर दर्शन' ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। जिस कारण गरीब, पीडित, समाज आज शिक्षित हुआ है, संगठित होकर अपने ऊपर होनेवाले अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करता हुआ दिखाई दे रहा हैं। इसके लिए साहित्य का क्षेत्र भी अपवाद नही है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के कारण ही दीन-दुखियों की वेदना, पीडा, दुःख-दर्द, को अभिव्यक्ति देने के लिए दलित साहित्यकारों के मन में संवेदनाएँ जगी। उसी से प्रेरित होकर ही दलित साहित्यकारों ने दलित साहित्य का सृजन किया है। 'आंबेडकर दर्शन ' ही दलित साहित्य की उर्जा, चेतना है, जो मनुष्य के विचारों को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसी कारण दलित साहित्य का प्राण 'आंबेडकर दर्शन ' है। जिसका प्रतिबिंब इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता पर दिखाई देता है।

कविता विधा मानवीय अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम है। कविता के माध्यम से कवि अपने निजी अनुभूतियों के आधार पर मनुष्य तथा समाज का समूचा चित्रण करता है। इक्कीसवीं सदी में भी 'आंबडेर दर्शन ' से प्रेरित होकर हिंदी कवियों ने कविता संग्रहों का सृजन किया है। इन कवियों ने कविताओं में पिछडे वर्ग के माध्यम से वर्तमान भारतीय समाज में स्थित पिछडे वर्ग का चित्रण किया है। इसलिए यह कविता संग्रह व्यक्ति विशेष पर केंद्रित न होकर पुरे समाज पर केद्रित हैं। देश तथा समाज की परिस्थितियों परंपराओं और नीतियों का विरोध करने के प्रयोजन से ही कई कविता संग्रह लिखे गए हैं। इनके कविता संग्रहों में समाज की विषमतावादी परिस्थितियों, परंपराओं के कारण निर्मित हुई विद्रुपताओं का चित्रण किया हैं। जिससे गाँव-शहर में स्थित पिछडा समाज डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचारों से प्रेरित होकर ही शिक्षा की ओर मुडा है। वह अपने संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजग हुआ है। स्वतंत्रता, समता और बंधुता के मूल्यों को समझ रहा है। इसलिए वह समाज में समता और सम्मान पाना चाहता है, लेकिन उसे हर जगह संताप या अपमान को ही सहना पड़ रहा है। यही संताप, अपमान इन कविताओं का आधार है।

इक्कीसवीं सदी के हिंदी कविता संग्रहों की परंपरा 2001 से शुरू होकर आगे विकसित हो गई है। इस परंपरा को कई पिछडे वर्ग के कवियों ने समृद्ध किया है। इनमें जयप्रकाश कर्दम, असंगघोष, विपिन बिहारी, सुदेश कुमार तनवर, कांता बौद्ध, जी. वी. रत्नाकर, जगदीश पंकज, दामोदर मोरे, राजेंद्र बड़गुजर, सोहनलाल सुबुद्ध, दादूलाल जोषी और श्यौराज सिंह 'बेचैन' आदि प्रसिद्ध कवि हैं। इनके प्रसिद्ध कविता संग्रह इस प्रकार है:

1. प्रा. दामोदर मोरे - सदियों से बहते जख्म
2. राजेंद्र बड़गुजर - मनु का पाप
3. दादूलाल जोशी - अब न चुभन देते है काँटे बबूल के
4. विपिन बिहारी - जलती रहें मषाल
5. असंगघोष - समय को इतिहास लिखने दो
6. कांता बौद्ध - कलम से कत्ल
7. श्यौराज सिंह बेचैन - चमार की चाय
8. सुदेश तनवर - माटी के वारिस
9. डॉ. जी. वी. रत्नाकर - मिट्टी की पाटी
10. जगदीश पंकज - निषिद्धों की गली का नागरिक
11. जयप्रकाष कर्दम - बस्तियों से बाहर आदि।

**इक्कीसवीं सदीं के हिंदी कविता में अभिव्यक्त आंबेडकर दर्शन :**

निरीश्वरवाद 'आंबेडकर दर्शन' का प्रमुख तत्व माना जाता है। जिसमें ईश्वर , आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग, नरक आदि को नकारा गया है। पिछडे वर्ग के अज्ञान का लाभ उठाकर उच्च वर्ग के लोगों ने धर्म की आड में ईश्वर की कल्पना की है। ईश्वर ही सृष्टि का निर्माता है, वह सर्वव्यापी है, चराचर में बसा हुआ है, ऐसी काल्पनिक बातें बताकर समाज के लोगों का शोषण किया जाता है। इस

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54

सत्य को पहचान कर आंबेडकर दर्शन में ईश्वरवाद का विरोध किया है। इसी निरीश्वरवाद का इक्कीसवीं सदी के कवियों ने अपनी कविताओं में चित्रण किया हैं।

कवि असंगघोष ने अपने 'समय को इतिहास लिखने दो' कविता संग्रह की कविता 'यक्ष प्रश्न ' में इसी को उजागर करते लिखा है- ''बता तू और तेरा ईश्वर / इतना स्वार्थी क्यों हैं?''4 विवेकशील व्यक्ति केवल प्रतिकार नही करता, वह सवाल भी करता है। कवि असंगघोष चेतन कवि है, उनके अंदर प्रश्नों का एक सैलाब सा है, जो निरंतर उन्हें विचलित करता है। कवि की उपर्युक्त पंक्तियाँ मन को बेचैन करनेवाली है। कवि ईश्वर , उसके अवतार और उसके देवी देवताओं पर सवाल करते हुए कवि उनके अस्तित्व को चुनौती देता है। ईश्वर के प्रति इस शिकायत के साथ, जिसका कहीं कोई संतोषजनक जवाब पिछडे वर्ग को आज तक नहीं मिला है, कवि प्रतिदिन ईश्वर का महिमागान करनेवाले, पिछडे वर्ग को उसकी शक्ति, भक्ति का पाठ पढ़ानेवाले ब्राहमण-पुरोहित वर्ग से उपर्युक्त पंक्तियों से सवाल करता है।

कवि 'विपिन बिहारी' भी अपने कविता संग्रह 'जलती रहे मशाल' की 'मेरा ईश्वर आस्थाओं का नहीं होगा' इस कविता में ईश्वरवाद को उजागर करते हुए लिखते हैं- ''मेरा ईश्वर कतई नहीं होगा पत्थर का / नही होगा पूजा-पाठों का / मेरा ईश्वर स्कूल होगा / सशरीर होगा।''5

कवि के अनुसार ईश्वर ब्राहमणवाद की सबसे बडी ताकत है। ईश्वर के नाम पर एक ओर उसने समाज पर अपनी धार्मिक सत्ता कायम की है तो दूसरी ओर मंदिरों के रूप में विशाल आर्थिक साम्राज्य। पिछडे वर्ग के दमन और शोषण में ईश्वर की बहुत बडी भूमिका रही है। वर्ण-व्यवस्था का मूल भी ईश्वर वाद में है। ब्राह्मणवाद, नित्य प्रवचनों, और पूजा-प्रसाद के जरिए ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने में लगा है, मगर पिछडा वर्ग अब समझने लगा है कि, दुनिया में ईश्वर जैसी कोई सत्ता नहीं है। कवि विपिन बिहारी ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रस्तुत पंक्तियों में नकारा है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने अपने जीवन विषयक तत्वज्ञान में 'समता' को भी महत्वपूर्ण माना हैं। हमारे देश में फैली विषमता को दूर करने के उद्देश्य से ही उन्होंने संविधान में 'समता' का प्रावधान रखा है। जो इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में प्रमुखता से दिखाई देता है। कवि सुदेश तनवर के 'माटी के वारिस' कविता संग्रह की 'मैं हैरान हूँ' कविता में लिखते हैं-''मैं हैरान हूँ किसी औरत ने / धिक्कारा नहीं उस राम को / जिसने गर्भवती 'माँ' को / अग्निपरीक्षा के बाद भी / निकाल दिया घर से /धक्के मारकर।''6

समाज के साथ मानवीय स्तर पर जुडना कवि की पहली जिम्मेदारी है। इस कवि-धर्म का निर्वाह करते हुए सुदेश तनवर समाज को बाहर से नहीं देखते, बल्कि समाज के बीच जाकर उसके साथ संवाद करते हैं , उसके सुख-दुःख और संघर्ष में भागीदार बनते हैं। उनके विचारानुसार इक्कीसवीं सदी में भी जब नारी शिक्षा लेकर आत्मनिर्भर बनकर विभिन्न क्षेत्रों में उन्नत्ति के आयामों को छू रही है, क्यों वह आज भी अपने अपमान और उपेक्षा को धार्मिक आदेश मानकर स्वीकार कर रही है? धार्मिकता का ऐसा जाल फैला है कि, उसमें नारी ही नही पुरूष भी समान रूप से जकडा हुआ है। मंदिर इस धार्मिकता का केंद्र है। कवि के अनुसार यही विषमतावादी समाज व्यवस्था हमारे समाज में असमानता और अन्याय को जन्म देती है। इसलिए जहाँ कहीं भी, जिस रूप में भी अमानवीयता दिखायी देती है कवि उसका प्रतिकार करता है और अपनी कविताओं के माध्यम से उस पर प्रहार करता है।

कवयित्री कांता बौद्ध अपने कविता संग्रह 'कलम से कत्ल' की कविता 'उगते सूरज बनों' में सामाजिक समता की बात करते हुए जनता की भुखमरी, बच्चों के कुपोषण, नारी बलात्कार, पिछडे वर्ग का शोषण, धर्म के नाम पर पाखंड का प्रतिकार करती हुई लिखती है- ''तुम जीवन की उमंग को / आँखों में अपनी / चमका लो / और, करो, संघर्ष क्योंकि /कुँजी है / सफलता की / संघर्ष ही।''7 शिक्षा को वह अत्यंत महत्वपूर्ण मानती है, इसलिए कवयित्री महंगी होने के कारण पिछडे वर्ग की पहुँच से दूर होती षिक्षा के प्रति चिंतित है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर शिक्षा के साथ-साथ संगठन को भी अपने तत्वज्ञान में महत्वपूर्ण मानते थे। उनके विचारानुसार पिछडे वर्ग पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार के पीछे उनका संगठन का अभाव ही एक कारण है। इसी कारण उन्होंने अपने भाषणों के माध्यम से पिछडे वर्ग को निरंतर प्रेरित किया हैं। कवि सुदेश तनवर अपने कविता संग्रह 'माटी के वारिस' की कविता 'कलम' में इसी को बताते हुए लिखते हैं -''अब / छोड दिया है मैंने / तुम्हारी गुलामी का रास्ता / और उठा ली है कलम / तुम्हारी चालकियों / दुष्प्रवृत्तियों के / खिलाफ।''8

आज के धर्मशास्त्रों द्वारा पिछडे वर्ग पर लादी गयी योग्यताएँ और निषेध ही दलितों के शोषण, गरीबी, पिछडेपन का कारण है। कवि इसी ओर इशारा करते हैं कि, आज के शोषण और अन्याय के खिलाफ मुखर होने का अपने मानवीय अधिकारों के लिए

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April 2022 Special Issue 05 Volume III (B) SJIF Impact- 5.54

आवाज उठाने का समय है। निडरता से सच कहते हुए अन्याय और अपमान का प्रतिकार करने का समय हैं। जब की आज की मुखरता आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य बेहतर बना सकती हैं।

इक्कीसवीं सदी का पिछडा पर्ग अब जागरूक हो गया है। वह शोषण के इस षडयंत्र को समझ रहा है और इसका मुकाबला करने के लिए खुद को तैयार कर रहा है। इसी बात को कवि डॉ . जी. वी. रत्नाकर अपने कविता संग्रह 'मिट्टी की पाटी' में की 'बच्चे मुकाबला कर रहें है आपस मे' कविता में कहते है-

''तुम्हारे नींव को निकालने वाले
हमारे बच्चे कर रहें हैं मुकाबला आपस मे।''9

आज का पिछडा वर्ग शोषण के कारणों की तरह तक जा रहा है, शोषण के मूल कारण 'जाति' को पहचानकर जाति की नींव को खोदने वाले मार्गो की खोज कर रहा हैं। पिछडे वर्ग के साहित्य की यही माँग है कि, ''हमें आदमी चाहिए और आदमियत चाहिए।''10 संक्षेप में कहाँ जाए तो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की वैचारिक ऊर्जा से पोषित-पल्लवित पिछडे वर्ग के साहित्य का दृष्टिकोण सामाजिक मानवतावादी है, जिसमें संपूर्ण समाज के लिए समता, स्वतंत्रता और बंधुता का संदेश हैं।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षतः कहा जाता है कि आंबेडकर दर्शन के परिप्रेक्ष्य में हिंदी कविता का मूल स्वर सदियों से चली आ रही जातीय मानसिकता को ध्वंस करने का कार्य करती है I गुलामी की दासता से बाहर निकलकर परिवर्तन करने के लिए तैयार हो जाता है I यह परिवर्तन कलम से किया जा रहा है I परंपरागत साहित्य शास्त्रीय मानदंडों से हटकर आंबेडकर विचारों से प्रेरणा लेकर आंबेडकरी कवि कविता लिखता है और संघर्ष करने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है I स्त्री की गुलामी का जिक्र भी प्रस्तुत विश्लेषण में दृष्टीगोचर होता है I पत्थर के ईश्वर की भ्रम में डालने वाली अवधारणा को नकार दिया गया है I ईश्वर के नाम पर किए जाने वाले आडंबर का भंडाफोड़ प्रस्तुत कविताओं में किया गया है I

**संदर्भ ग्रंथ सूची:**

1. डॉ. नरेंद्र जाधव, बोल महामानव के, अनुवाद और संपादक, खंड-1, ग्रंथाली प्रकाशन, माटुंगा, मुंबई-16, सं. 2012, पृ.35
2. वही पृ. 186
3. वही पृ. 185
4. असंगघोष, समय को इतिहास लिखने दो, शिल्पायान प्रकाशन, दिल्ली, पं.सं. 2015, पृ. 27
5. विपिन बिहारी, जलती रहे मशाल, चंद्रिका प्रसाद, जिज्ञासु प्रकाशन, दिल्ली, पं.सं. 2012, पृ. 27
6. सुदेश तनवर, माटी के वारिस, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, पं.सं. 2020, पृ. 87
7. कांता बौद्ध, कलम से कत्ल, कदम प्रकाशन, दिल्ली, पं.सं. 2016, पृ. 55
8. सुदेश तनवर, माटी के वारिस, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, पं.सं. 2020, पृ. 64
9. डॉ. जी. वी. रत्नाकर, मिट्टी का पाटी, गीता प्रकाशन, हैद्राबाद, पं.सं. 2017, पृ.40
10. डॉ . डी. आर. जाटव, डॉ. आंबेडकर का समाज दर्शन , पृ. 2

□ □ □